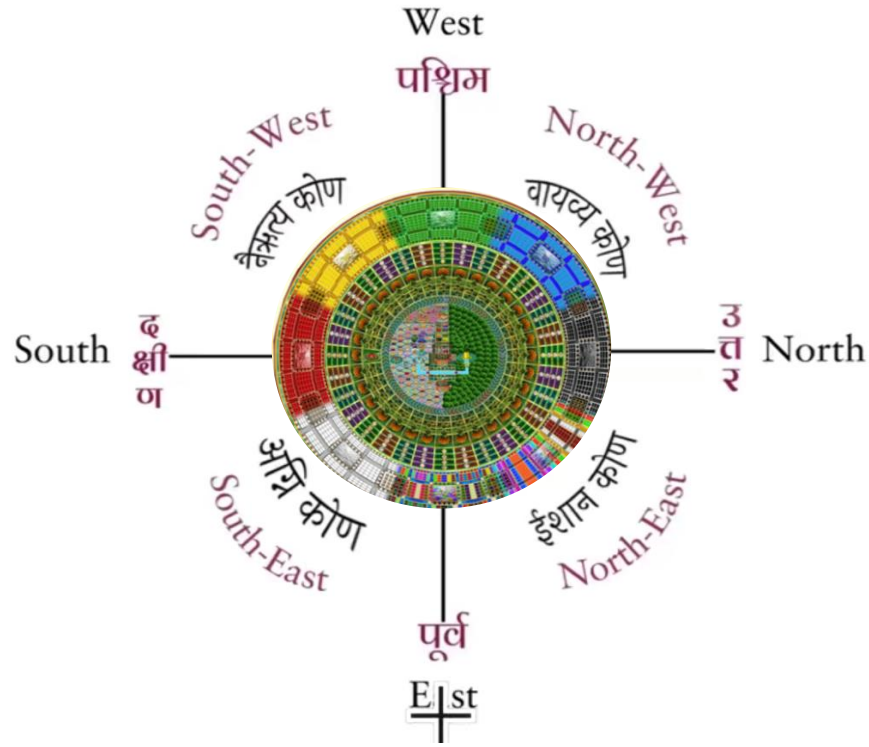


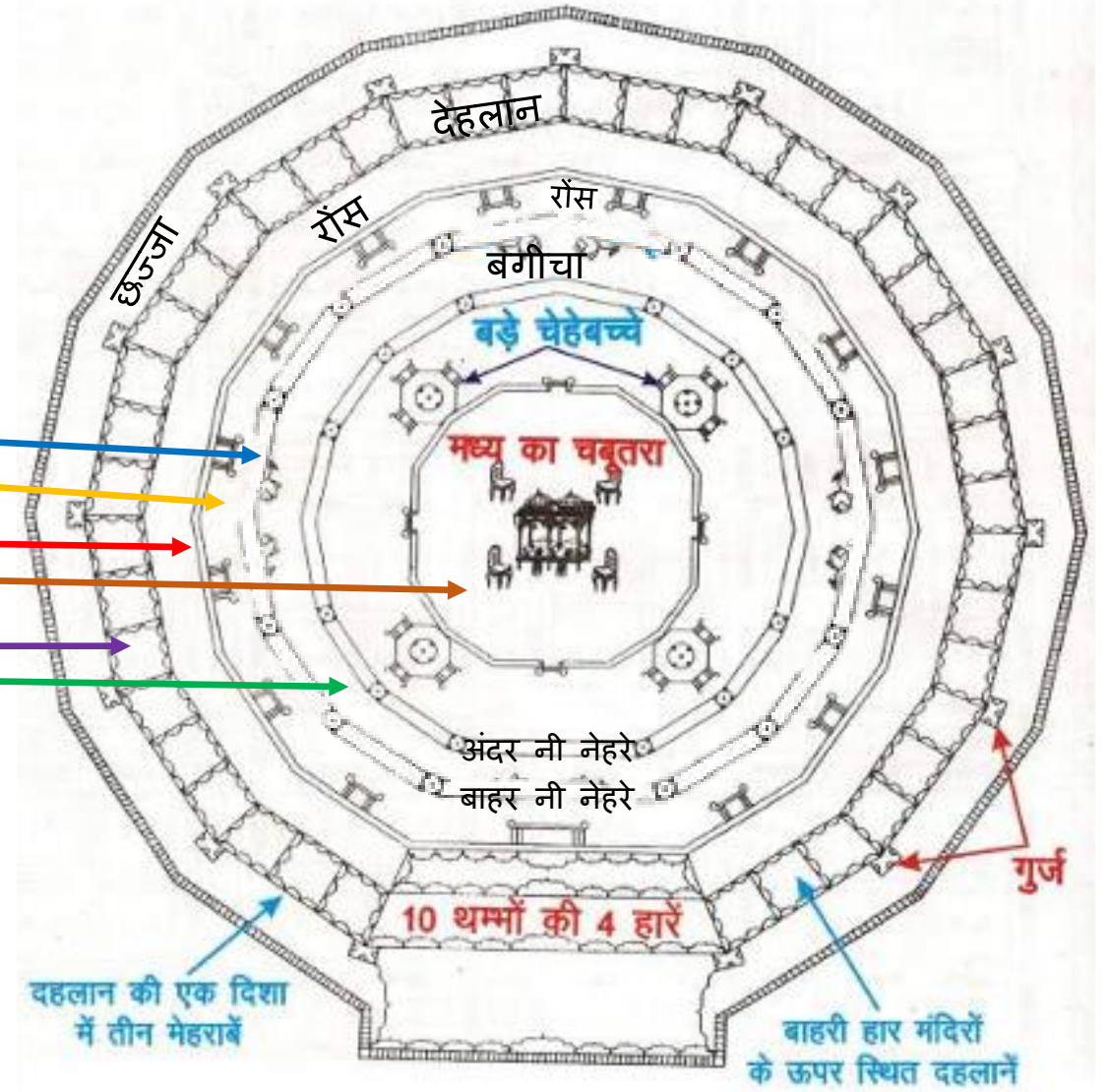
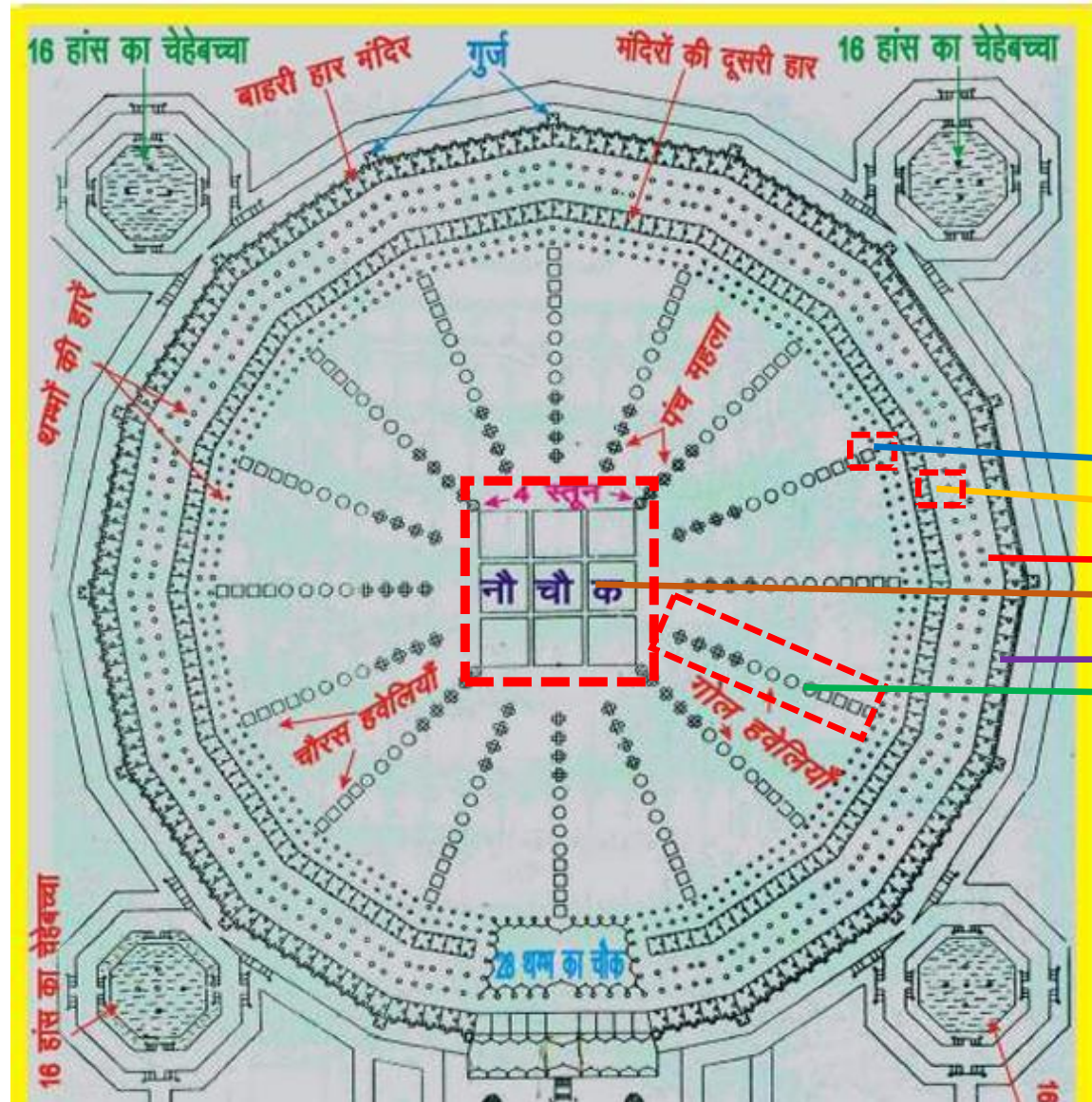


धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे ।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए ।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के ॥

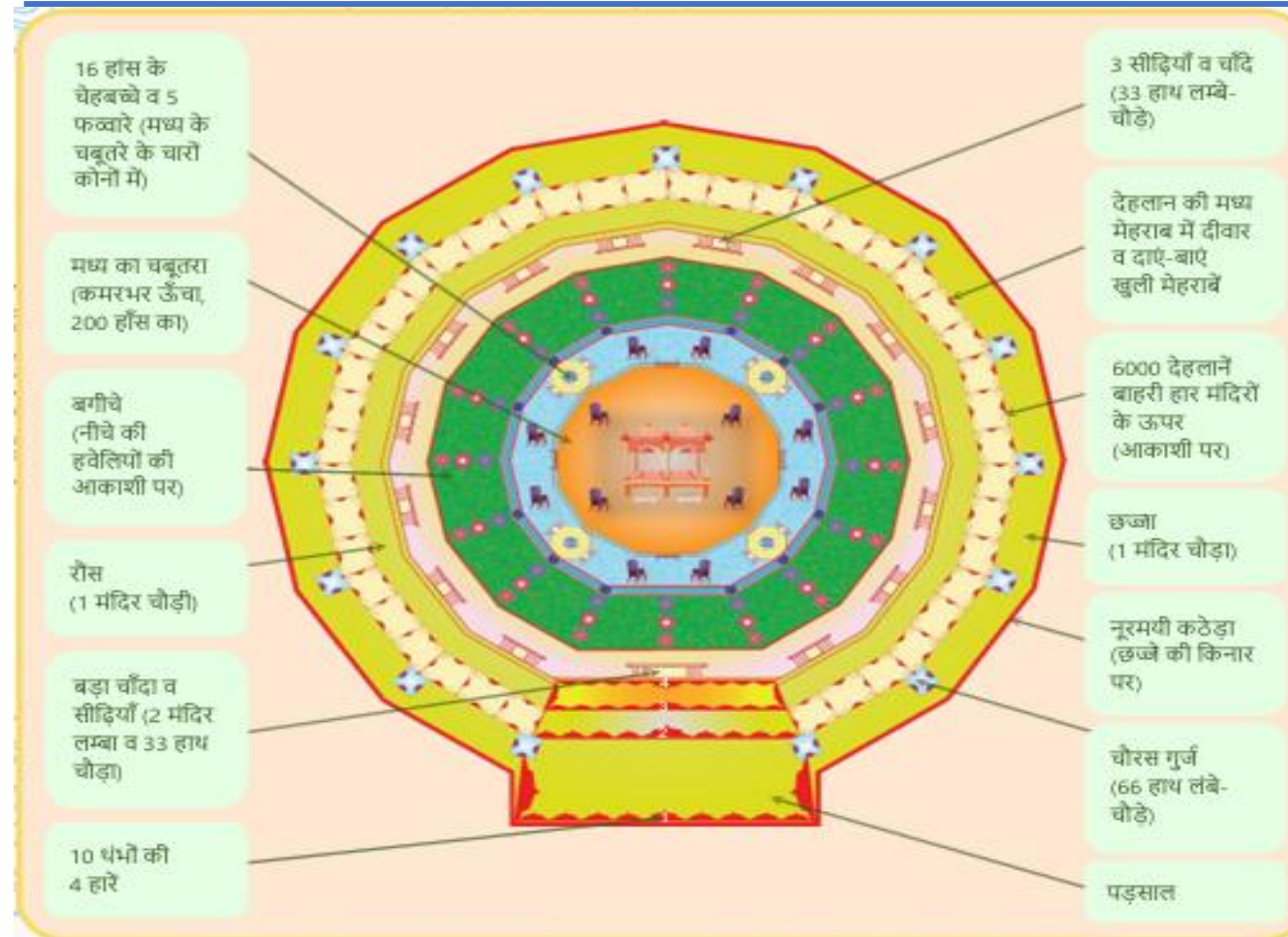
नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ॥

अब कहूं भोम दसमी, जो है चांदनी नूर ।
ऊपर चढ़के देखिए, आठों सागर जहूर ॥१॥
पूरब दक्खिन कोन में, जहां सागर है नूर ।
जिमी सुपेत है तिन की, ताको कह्यो न जाए जहूर ॥२॥
ए मोहोल हैं सब हीरन के, कई रंग जवेरों जोत ।
इनकी जिमी सुपेत में, कई तरंग अखण्ड उद्योत ॥६॥
नीर सागर दक्खिन दिस, मुकाबिल जो मानिक ।
तहां जिमी लाल है, चारों मोहोलात लाल बुजरक ॥८॥
पशु पंछी इत लाल रंग, सब जोगवाई लाल ।
टापू लाल दरम्यान में, इत देखे ही होत खुसाल ॥९॥
दरम्यान दक्खिन और पश्चिम के, है सागर उज्जवल खीर ।
पीत रंग तहां शोभित है, हे गृद चबूतरा तीर ॥११॥
वन पशु पंखी पीत रंग हैं, चारों हार हवेलिन ।
पीत रंग सब तिन का, जब झलकत नूर रोशन ॥१३॥
उत्तर दिस सागर, मधु सागर रंग है ठाम ।
मोहोल जिमी सब एक रस, याकी साख अल्ला कलाम ॥१६॥
सब रस सागर देखिए, तरफ पूरब की जे ।
मोहोल चारों तरफ के, सब रंग है तिन के ॥१८॥
ए सागर आठों देखिए, ए चांदनी खड़े होए जब ।
रांग गिरद फिरती, नजरों आवत तब ॥१९॥



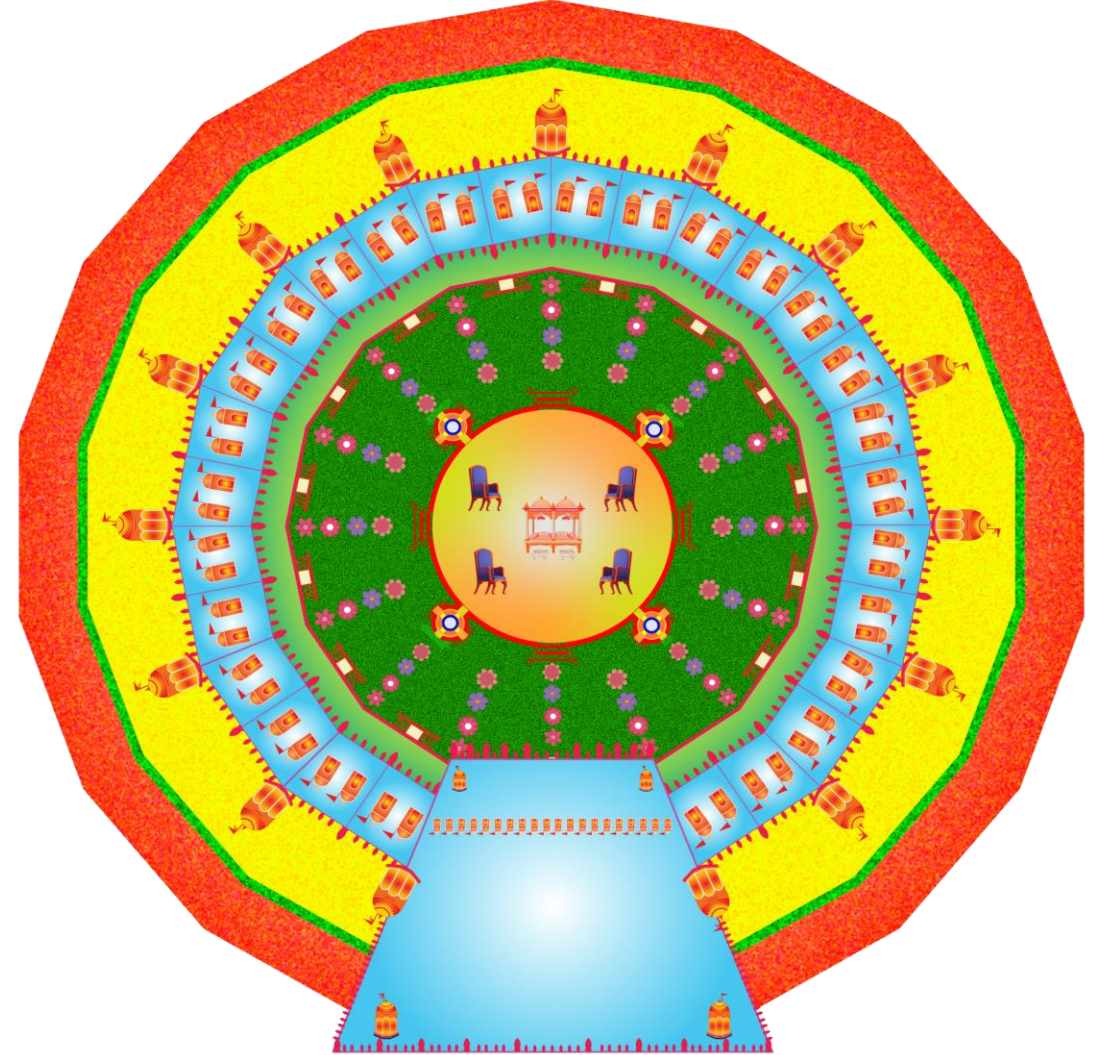
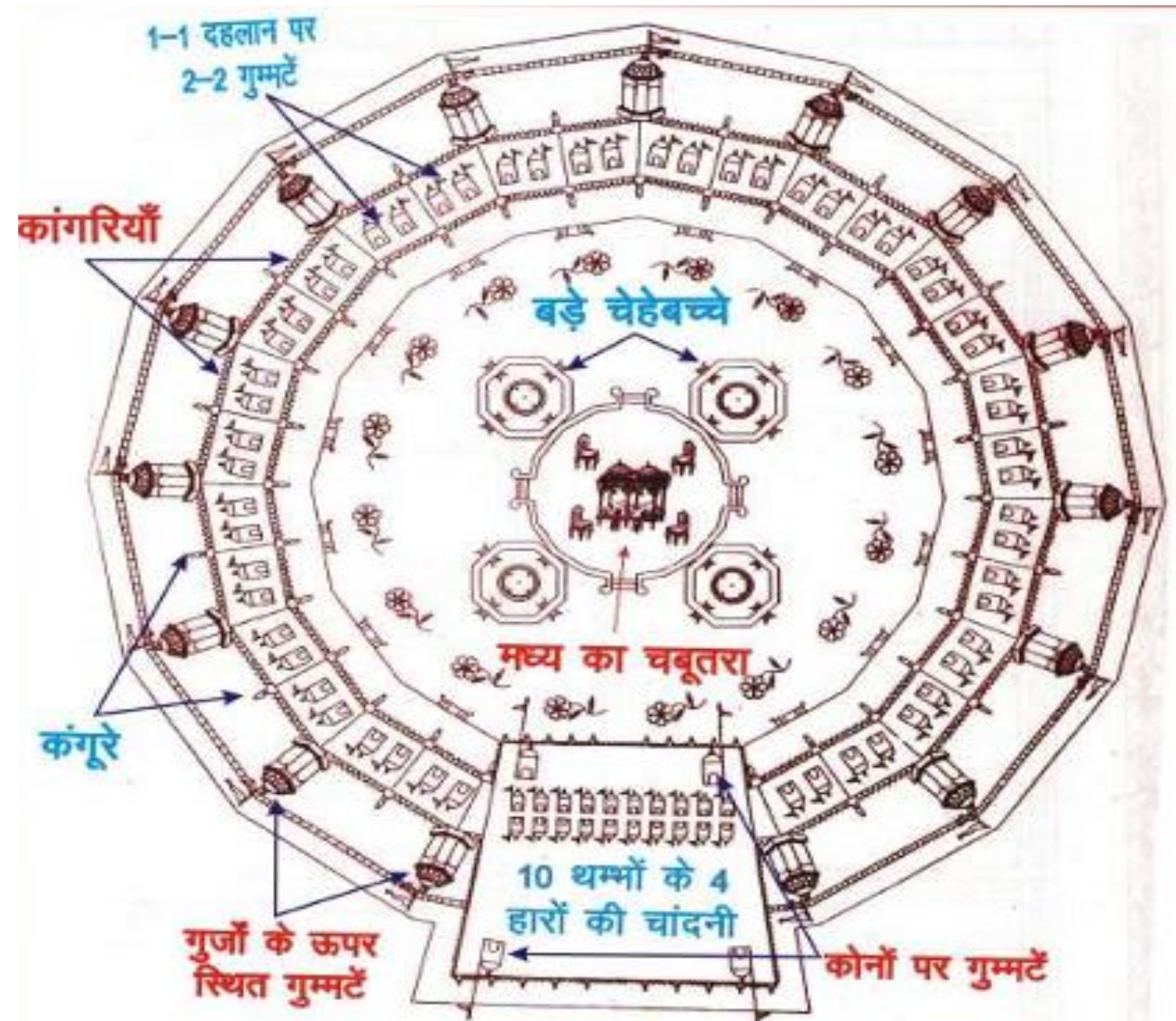




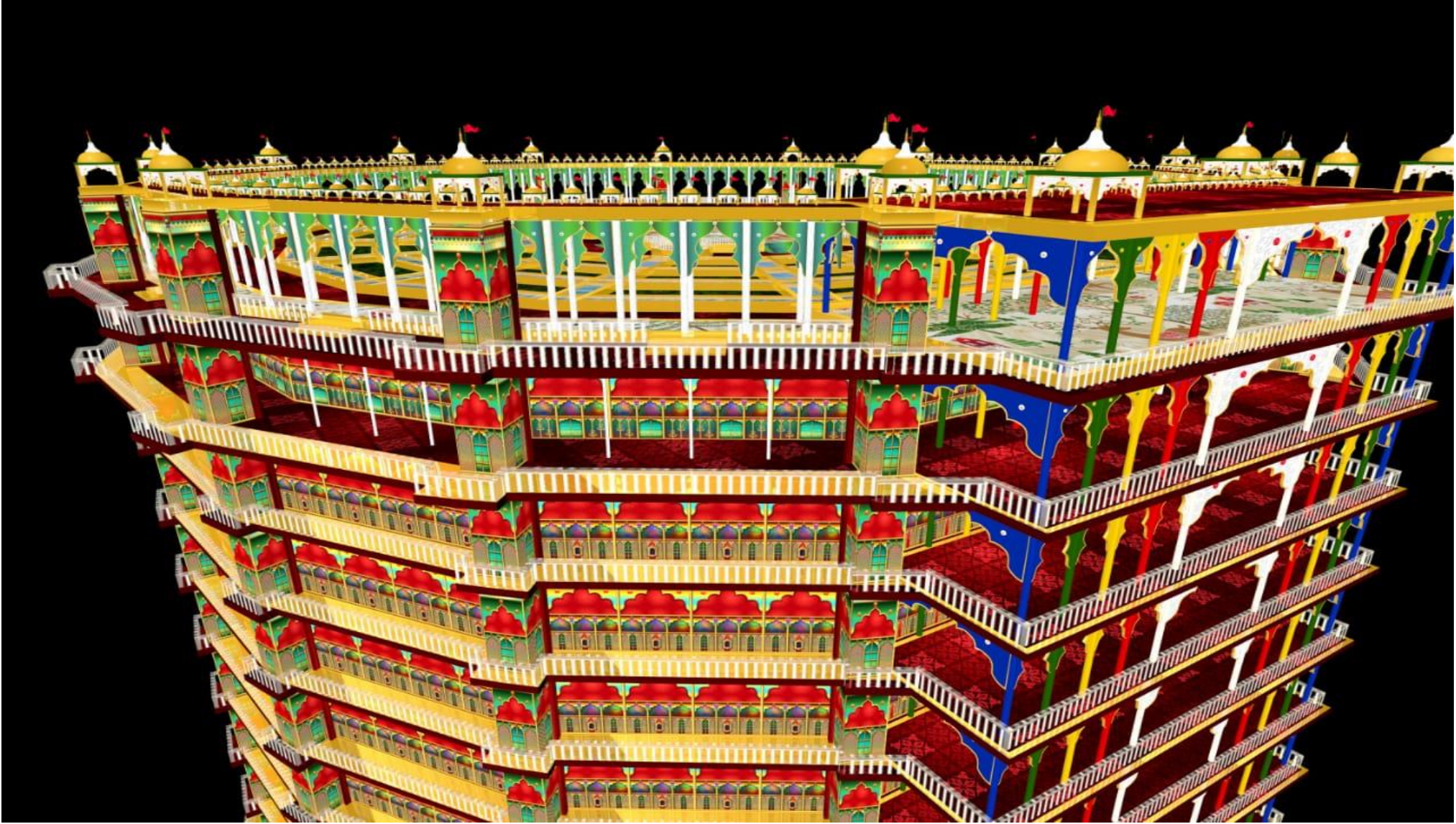


दरवाजे उपर के, एह छज्जे देहेलान ।
सो उंचे चढ़े चांदनीअ में, घेरा नूर रोशन जिमी आसमान ॥

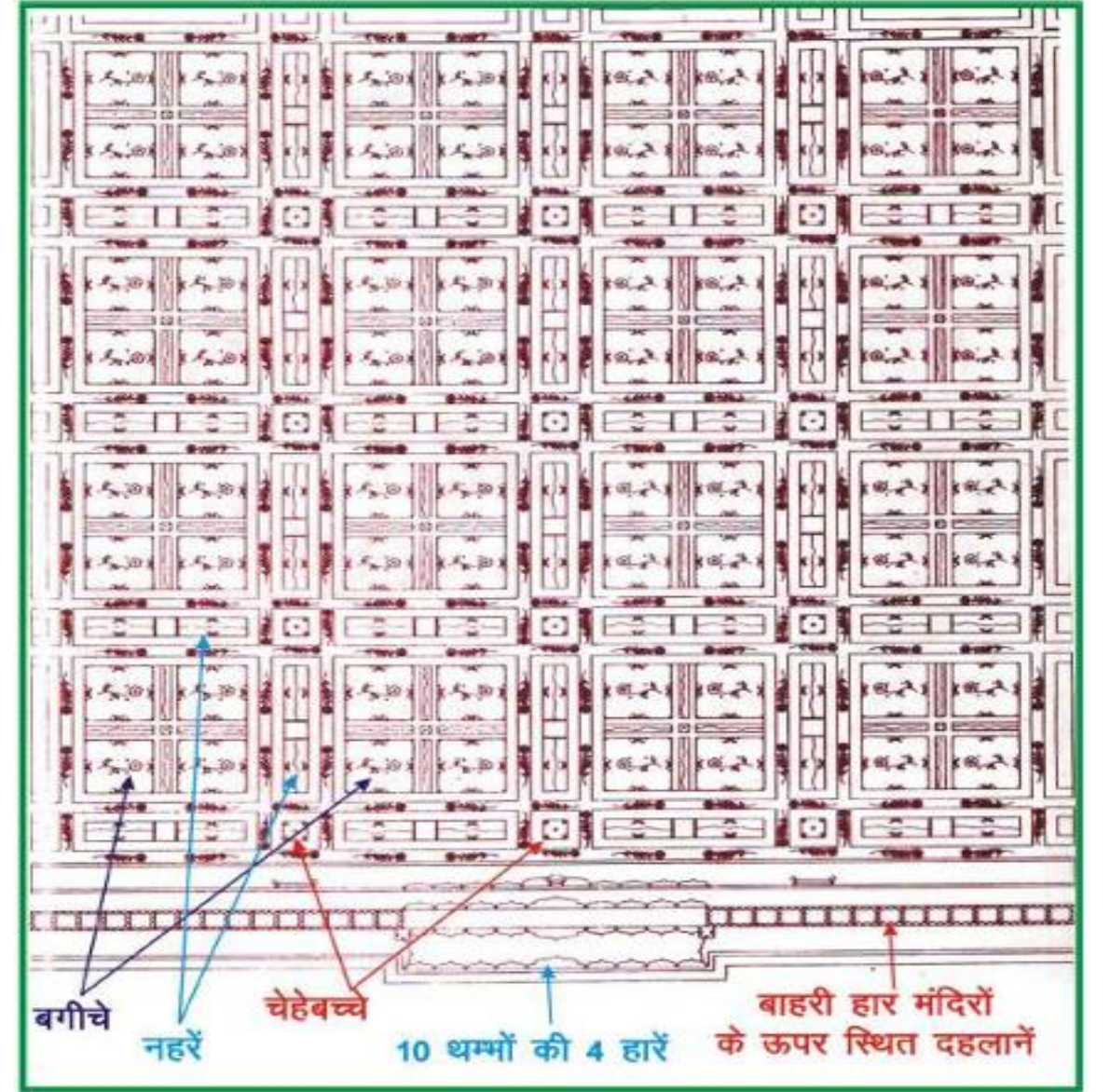
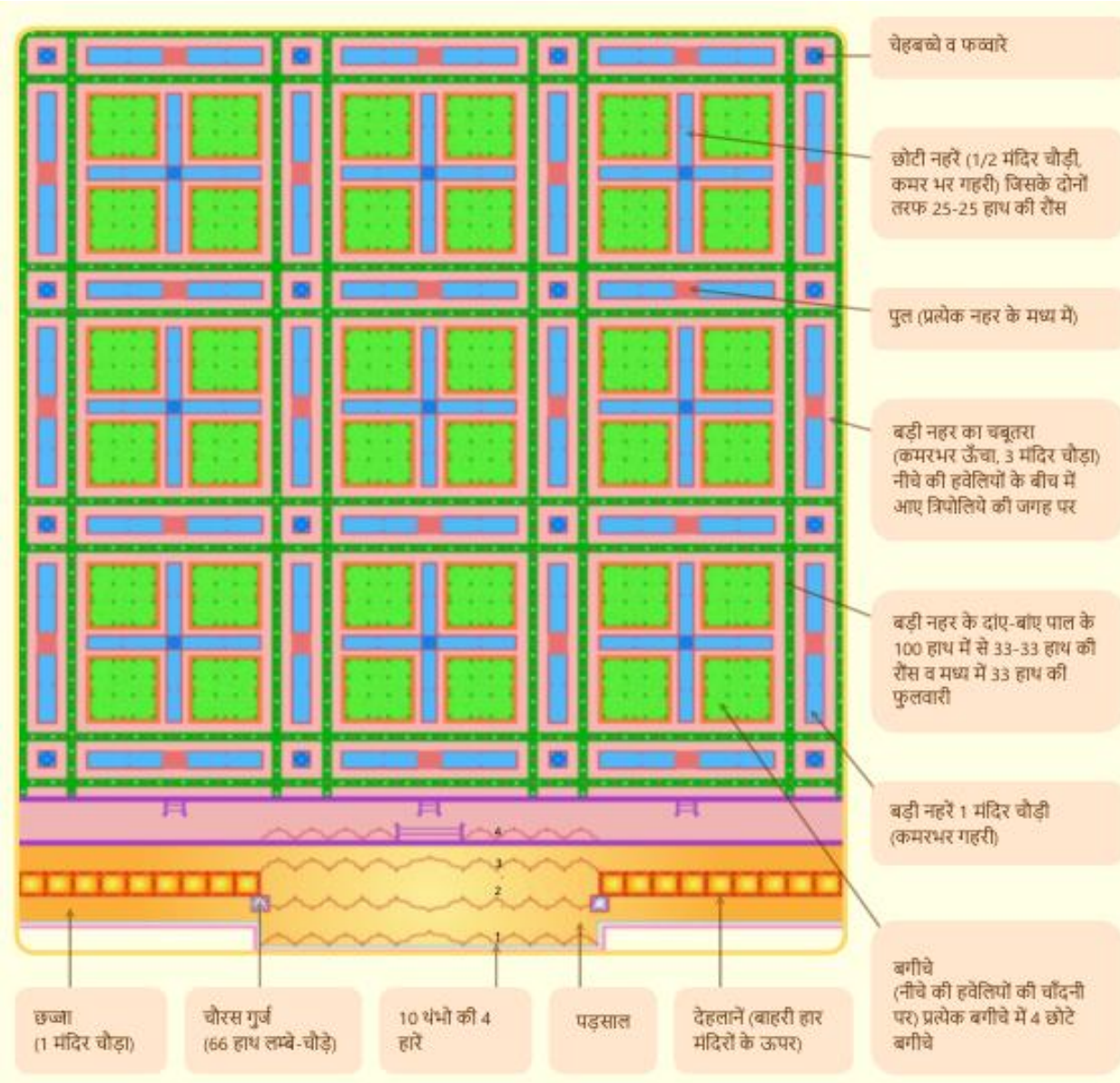














चारों तरफों चेहेबच्चे , ऐ शोभा अति सुंदर ।
जल गिरत फुहारे मोतियों , चारों चाँदनी अंदर ॥

ऐ जो गुमटियाँ गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए ।
बारे हजार गुमटियाँ , शोभा लेत अति सोए ॥

दसमीं भोमें चाँदनी , ऊपर कांगरी जोत ।
तेज पूँज इन नूर को , जानों आकास सब उद्योत ॥

अर्स आये लग्या आकासें , उठ्या जोत अपनी ले ।
चाँद सितारे अंबर , आये मुकाबिल अर्स के ॥

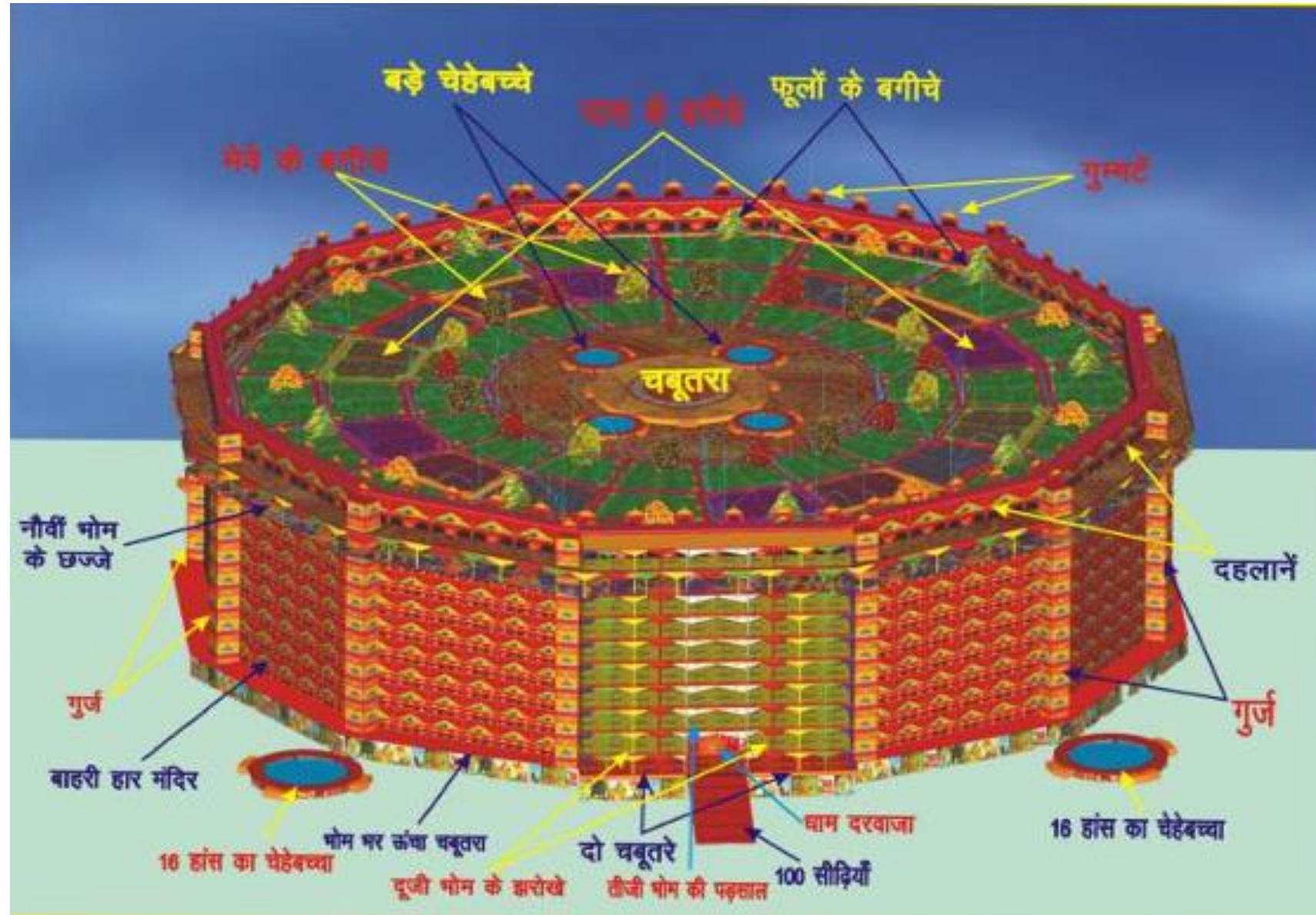
सुख चाँदनी चढ़ाय के , पूनम की मध्य रात ।
ऐ कौन देवे माशूक बिना , इश्क भीगे अंग गात ॥

सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात ।
ऐ कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात ॥

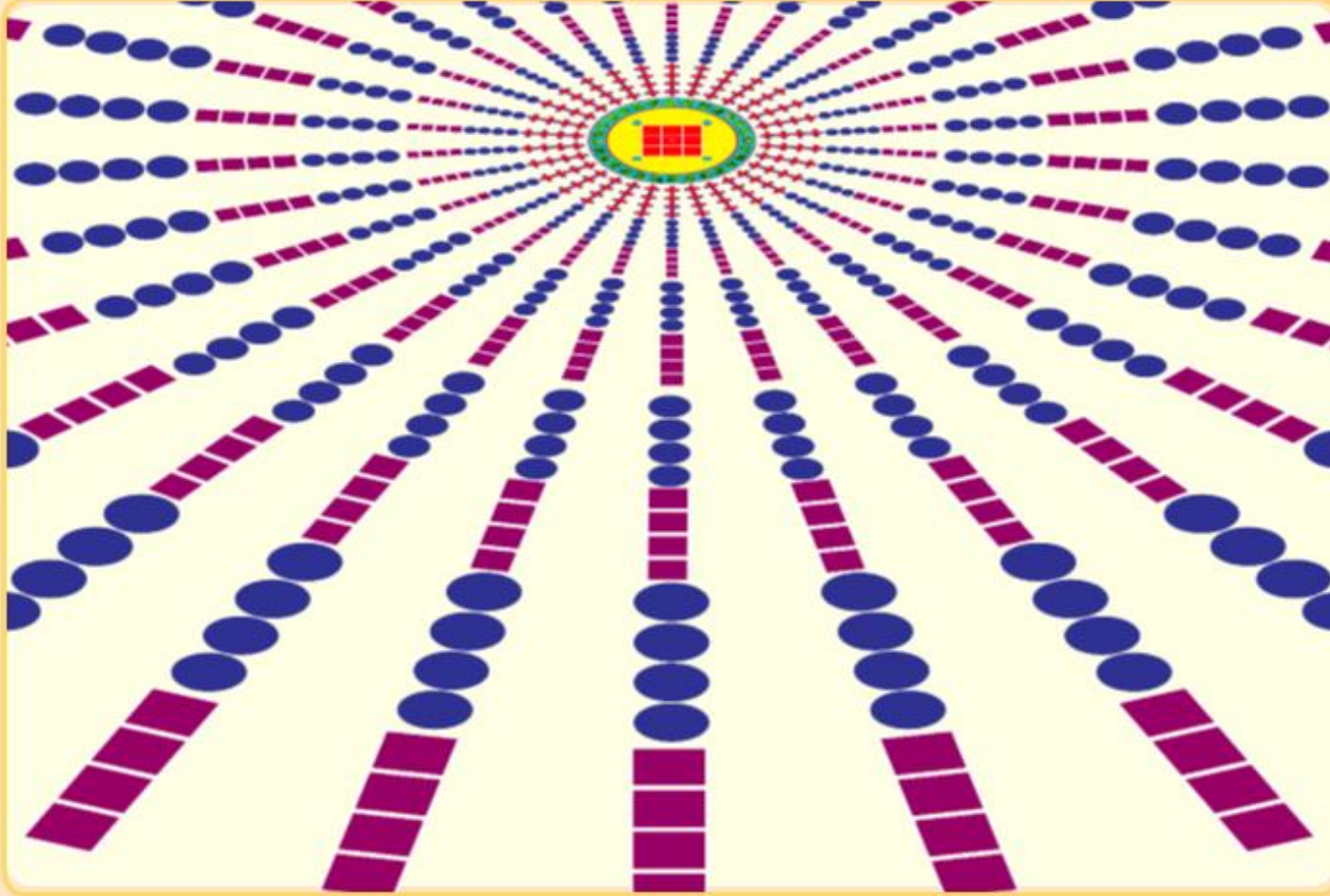


बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रह्या छिटक ।
रात बीच सिर आवत, जब कबूँ बैठे इत हक ॥











OR

